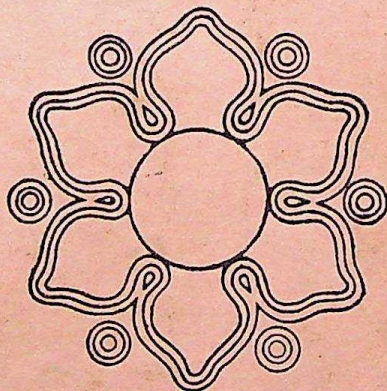


स्वतन्त्रता संग्राम

और

इलाहाबाद



उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद

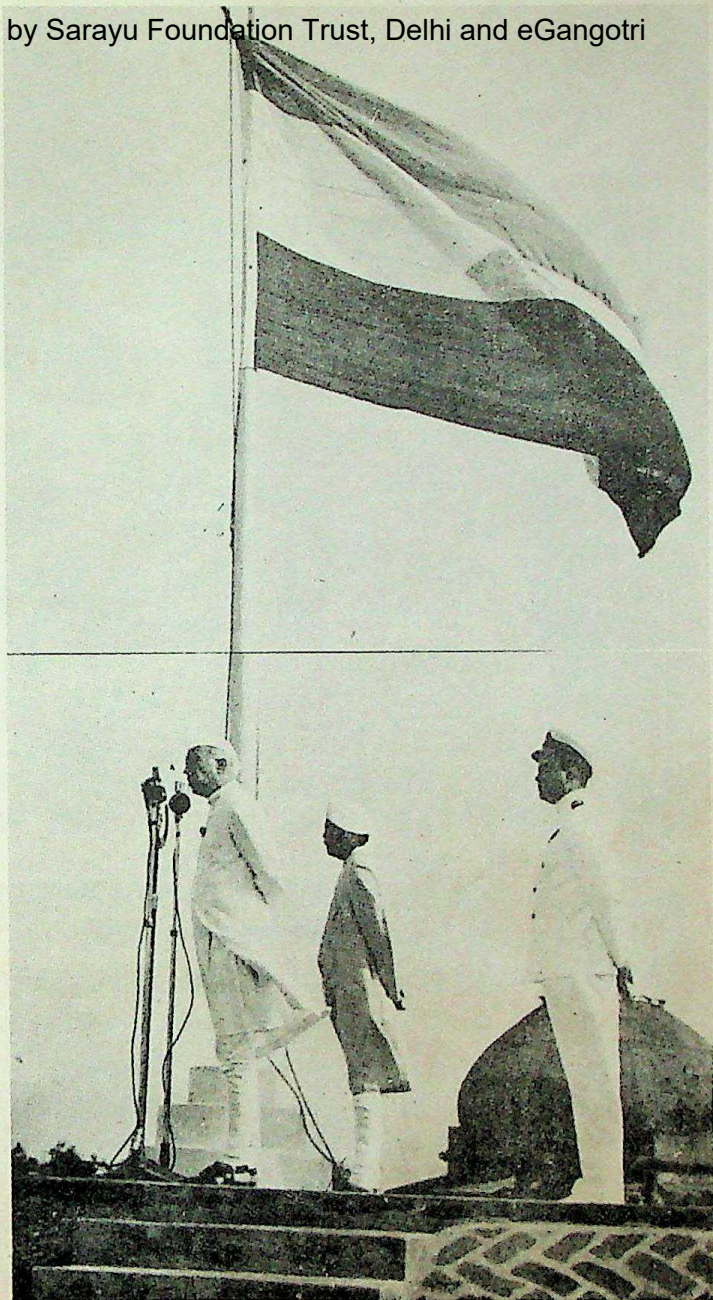
(२)

ई० पू० छठी शती में बुद्ध दो बार कौशाम्बी जो वत्स राज्य की राजधानी थी, में पधारे। ई० पू० तीसरी शती में वत्स राज्य मौर्य साम्राज्य के अन्तर्गत था। इस काल की एक खंडित लाट कौशाम्बी के खंडहरों में आज भी वर्तमान है। दूसरी लाट जिस पर अशोक का धर्मदेश अंकित है, इलाहाबाद के किले के भीतर स्थित है। इस स्तम्भ पर बाद में गुप्त राज-कवि हरिषेण द्वारा रचित समुद्रगुप्त की मनोहारी प्रशस्ति उकेरी गयी जिससे स्पष्ट है कि गुप्त काल में इलाहाबाद की महत्ता थी।

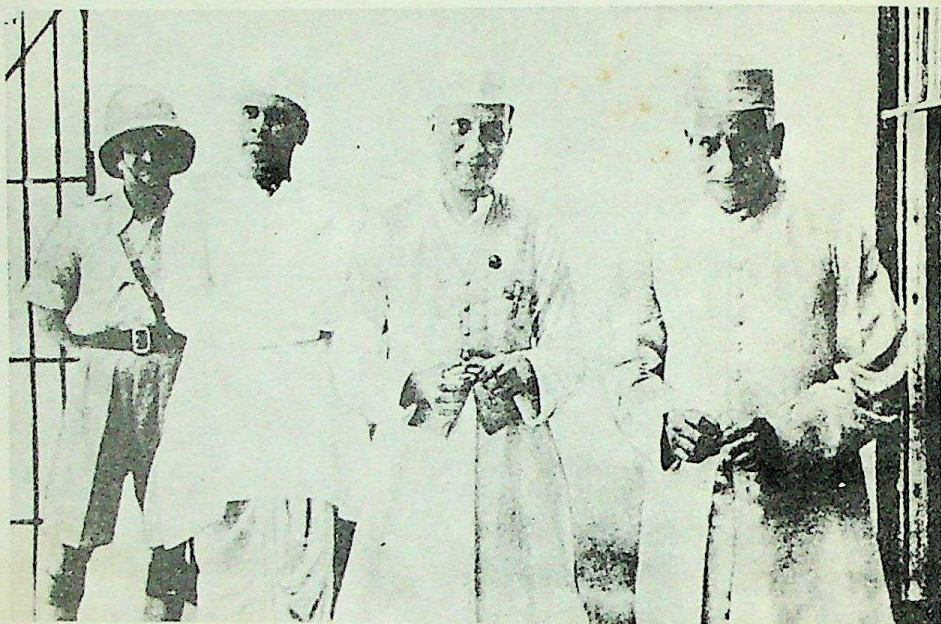
वत्स राज्य या प्रयाग क्षेत्र, शुंग, कुषाण तथा गुप्त राजाओं के अधीन भी रहा। तीनों युगों की महत्वपूर्ण पुरातात्विक सामग्री सामने आयी है। चीनी यात्री फाह्यान पाँचवीं तथा ह्वेनसांग सातवीं शताब्दी में इलाहाबाद आए थे। ह्वेनसांग ने लिखा है कि तीर्थ यात्री मोक्ष प्राप्ति के लिए एक वृक्ष से नदी में कूद कर प्राण त्याग करते थे। यह अक्षयवट नामक वृक्ष ही रहा होगा। इस प्रक्रिया का व्यापक उल्लेख प्राचीन साहित्य में मिलता है।

१२वीं शती में प्रयाग क्षेत्र मुसलमान शासकों के अधीन आया। इस समय कड़ा, एक प्रधान प्रशासन केन्द्र बन गया था। १५६२ में बादशाह अकबर कड़ा पहुँचा। कुछ लोगों ने उसका विरोध किया। किन्तु अकबर ने उन्हें तुरन्त कुचल दिया।

१५७५ में अकबर पुनः इलाहाबाद आया और संगम स्थित किले की आधार शिला रखी। नगर का नाम भी 'इलाहाबाद' रखा गया। जब किला बन गया तो प्रांत की राजधानी जौनपुर से इलाहाबाद स्थानांतरित कर दी गई। बीरबल भी प्रायः इलाहाबाद आया जाया करता था। अक्षयवट किले की चारदीवारी से घिर गया। इलाहाबाद में खुसरो की मृत्यु हुई। जहांगीर के समय इलाहाबाद की राजनैतिक महत्ता कम हुई। मुगल सल्तनत के दुर्बल होने के कारण मराठों ने इलाहाबाद के उप-राज्यपाल गुजा खां की हत्या कर दी और नगर को ध्वस्त कर डाला। अवध के नवाबों के समय इलाहाबाद को कुछ राहत मिली। १८०६ में सादतअली खां ने इलाहाबाद तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्रों को ईस्ट इंडिया कम्पनी को दे दिया। १८३४ में इलाहाबाद प्रान्त की राजधानी घोषित



१२ अगस्त १९४६ को लाल किले में राष्ट्रीयध्वज फहराते हुए
भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू



१४ अप्रैल, १९३० को मोतीलाल नेहरू और जवाहरलाल नेहरू,
केन्द्रीय नैनी जेल के बाहर

(३)

हुई। दो वर्ष बाद इसे फिर आगरा स्थानान्तरित कर दिया गया। १८५८ में लार्ड कैनिंग ने नार्थ वेस्टर्न सूबा कल्पित कर पुनः इलाहाबाद को राजधानी का गौरव प्रदान कर दिया।

१८५७ की क्रांति में इलाहाबाद नगर की महत्वपूर्ण भूमिका रही। ५ जून को कानपुर के सेना कमांडर, सर ह्यूम व्हीलर ने इलाहाबाद सूचना भेजी कि किले की हर प्रकार से रक्षा की जाय क्योंकि बागियों का आतंक जोर पर है।

६ जून को इलाहाबाद में क्रांति ने भीषण रूप धारण कर लिया। छठीं नेटिव बटालियन ने बगावत कर दी। उसके सिपाहियों ने अनेक गोरे अधिकारियों को मार डाला। अनेक घर जला या लूट लिए। जेल से भी कैदी मुक्त कर दिए गए। सरकारी खजाने को लूटा गया। लूटमार में स्थानीय रेजिमेंट तथा गोरे सिपाहियों, दोनों का हाथ था। कहा जाता है कि मेवायत जाति के लोगों ने सिपाही तथा रिसालदारों को भड़काया। इस योजना के लिए सैदाबाद में एक पंचायत बुलाई गयी थी।

कुछ समय पश्चात् बगावत को और सुनियोजित किया गया। मौलवी लियाकतअली जो दोआबा के एक फकीर थे, विद्रोहियों के साथ ७ जून को इलाहाबाद पहुँचे। उसने खुसरोबाग में डेरा डाला और अपने को दिल्ली के बादशाह द्वारा नियुक्त गर्वनर घोषित कर शासन का झण्डा गाड़ दिया। उसने कोतवाल, थानेदार तथा तहसीलदारों की भी नियुक्ति कर दी। अंग्रेजों की बढ़ती शक्ति को देखकर लियाकत अली १६ जून को इलाहाबाद से भाग गये। बाद में वे पकड़े गये और उन्हें काले पानी की सजा दी गई। १२ जून से १६ जून १८५७ तक गोरी सेनाओं ने इलाहाबाद नगर को तहस नहस कर डाला। प्रति दिन सैकड़ों संदिग्ध विद्रोही तथा निरपराध लोग पकड़े जाते रहे और उन्हें मृत्यु दण्ड दिया गया। कहा जाता है कि ३ घण्टे ४० मिनट में कोतवाली के निकट एक नोम के पेड़ से ६३४ व्यक्तियों को लटका कर फाँसी दी गयी। अपने सम्मान की रक्षा के लिये बहुत सी स्त्रियों ने कुँओं में कूद कर आत्महत्या कर ली। १७ जून को जब हैवेल इलाहाबाद पहुँचा, तो उसने पेड़ों पर लटके अनेक शव देखे। कहा जाता है कि आठ गाड़ियाँ प्रति दिन, तीन महीने तक विभिन्न स्थानों से इन शवों को

(४)

संकलित करती रहीं। जॉन के० के अनुसार क्रान्ति में शहीद होने वाले व्यक्तियों की संख्या ६००० थी। नगर सीमा के आठ तथा कुछ निकटवर्ती गांवों को भी गोरो ने जला दिया था।

वयस्कों के अतिरिक्त, बालकों ने भी १८५७ की क्रांति में भाग लिया। हाथ में झंडे लिए बालक कोतवाली के निकटवर्ती गलियों से निकल कर मुख्य सड़क पर आये थे। गोरे सिपाही इनके उत्साह को देख कर अचम्भित हुए। फिर भी उन्होंने इनके साथ अमानवीय व्यवहार किया। एडमानस्टन ने लिखा है कि बालकों के एक पूरे झुंड को फांसी पर लटका दिया गया था।

१८५७ की क्रान्ति किसी न किसी प्रकार जुलाई १८५८ तक चलती रही। गंगा पार, तथा जमुना पार क्षेत्रों में उपद्रव होते रहे। फजल आजम तथा बेनी बहादुर इस अंतिम अभियान के नेता थे।

१८५८ में ध्वस्त नगर की राख पर गोरी सरकार ने एक नया नगर बसाया। इसी वर्ष राजधानी आगरा से इलाहाबाद स्थानांतरित कर दी गयी। इलाहाबाद में स्वतन्त्रता का सर्वप्रथम बिगुल १८५७ में ही बजा था।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तीन अधिवेशन बम्बई, कलकत्ता तथा मद्रास में सम्पन्न हुए। इलाहाबाद से इन अधिवेशनों में कई प्रतिनिधि गये। इनमें विशम्भरनाथ, अयोध्यानाथ, मदनमोहन मालवीय तथा सुरेन्द्रनाथ सेन के नाम उल्लेखनीय हैं। चतुर्थ अधिवेशन १८८८ में इलाहाबाद में हुआ। गोरी सरकार ने अधिवेशन पंडाल के लिए कोई समुचित स्थान नहीं दिया। अन्त में, दरभंगा के महाराजा ने अपना महल (अब दरभंगा कालोनी में खंडित) कांग्रेस के अधिवेशन के लिए दे दिया। इस अधिवेशन के अध्यक्ष फिरोजशाह मेहता थे।

पुनः कांग्रेस का आठवां अधिवेशन १८८२ में इलाहाबाद में डब्ल्यू० सी० बनर्जी की अध्यक्षता में हुआ। इस सम्मेलन में आवकारी, पुलिस तथा सेवा आयोग विभाग के कार्य कलापों की तीखी आलोचना की गई।

१९वीं सदी के उत्तर काल की प्रमुख विशेषता राष्ट्रीय जागरण है। २३ मार्च १८७४ की "कविवचन सुधा" में भारतेन्दु ने एक प्रतिज्ञापत्र प्रकाशित करके

(५)

विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार का आह्वान किया था। यह प्रतिज्ञापत्र इलाहाबाद में भी बंटा था।

२०वीं शती के प्रारम्भ से ही इलाहाबाद नगर अधिक राजनैतिक गति-विधियों में भाग लेने लगा था।

१९०१ में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन कलकत्ता में हुआ। इसमें दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर रंग-भेद तथा उत्पीड़न के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव हुआ। गांधी जी इस सम्मेलन में उपस्थित थे। १९०६ की कलकत्ता कांग्रेस ने, जिसके अध्यक्ष दादाभाई नौरोजी थे, सर्वप्रथम 'पूर्ण स्वराज्य' का प्रस्ताव पारित किया। १९०७ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दो छात्र, संजूरअली सोख्ता तथा सुन्दरलाल के निमन्त्रण पर लोकमान्य तिलक, बिपिन चन्द्र पाल तथा लाला लाजपतराय, इलाहाबाद आए। इन नेताओं ने नगर में कई सभाओं को सम्बोधित किया, जिससे राष्ट्रीय भावना को एक नया मोड़ मिला। राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेने के कारण सन् १९०६ में ये दोनों छात्र विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिये गये। उसी दौरान कानून के विद्यार्थी नित्यानन्द चटर्जी ने यूरोपियन क्लब (जिसमें इस समय लोक सेवा आयोग का कार्यालय है) पर एक बम फेंका।

१९०१ में मोतीलाल नेहरू प्रांतीय राजनैतिक सम्मेलन के अध्यक्ष बने। इसी सम्मेलन के पश्चात् राजनीति में उनका सक्रिय प्रवेश हो गया।

लाहौर की भारतमाता सोसाइटी की प्रेरणा से इलाहाबाद में १९०७ में 'स्वराज्य' साप्ताहिक पत्र प्रकाशित हुआ। इस प्रसिद्ध उर्दू पत्र की कहानी दिल को दहलाने वाली है। १९०७ तथा १९१० के बीच २½ वर्ष में इसके कुल ७५ अंक प्रकाशित हुए। प्रकाशित लेखों ने राष्ट्र को नवीन चेतना प्रदान की। सरकार को इसका प्रकाशन पसंद नहीं था और वे इसके संपादकों को तंग करती रही। इतनी सीमित अवधि में, इतना अधिक उत्पीड़न तथा त्याग शायद ही किसी अन्य पत्र ने इस देश में देखा हो। समय समय पर इसके सभी सम्पादक एक एक कर पकड़ लिए गये और उन्हें लम्बी तथा कठोर सजाएं दी गईं। स्वराज्य के सम्पादक होतीलाल को १० वर्ष और बाबूराम हरि को २१ वर्ष की काले पानी की सजा दी गयी। संभवतः संसार के इतिहास में शायद ही कोई दूसरा ऐसा पत्र होगा जिसके

(१)

सम्पादकों को २३ वर्ष में कुल मिलाकर १२५ वर्ष की सजा दी गयी हो। निरंतर कुठाराघात के कारण १६१० में पत्र को बंद करना पड़ा।

प्रयाग में छपने वाले 'अभ्युदय' के जन्मदाता मदनमोहन मालवीय थे। मालवीय 'माडरेट' सुधारवादी थे। १६०८ में पुरुषोत्तमदास टंडन इसके संपादक हुए। बाद में कृष्णकान्त मालवीय, वेंकटेश नारायण तिवारी तथा पद्मकांत मालवीय ने इसका सम्पादन किया। १६३० से १६३२ के राष्ट्रीय तथा क्रांतिकारी आंदोलनों में इस पत्र की अभूतपूर्व भूमिका रही।

इलाहाबाद से प्रकाशित 'अभ्युदय' तथा 'भविष्य' नामक पत्रों ने राष्ट्रीय जागरण में बड़ा योगदान दिया, किन्तु प्रेस एक्ट की कठोर धाराओं के कारण ये दोनों पत्र बन्द हो गये।

१६०६ में इलाहाबाद, क्रान्तिकारियों का कार्य-क्षेत्र बन गया था। सरदार अजीतसिंह, सूफी अम्बा-प्रसाद, मौलाना हजरत मोहानी तथा राजा महेन्द्रप्रताप, चौक गंगादास स्थित सुन्दरलाल के निवास स्थान पर विचार विनिमय करते थे। आचार्य नरेन्द्रदेव तथा गणेशशंकर विद्यार्थी भी यदा कदा इन गोष्ठियों में भाग लेते थे।

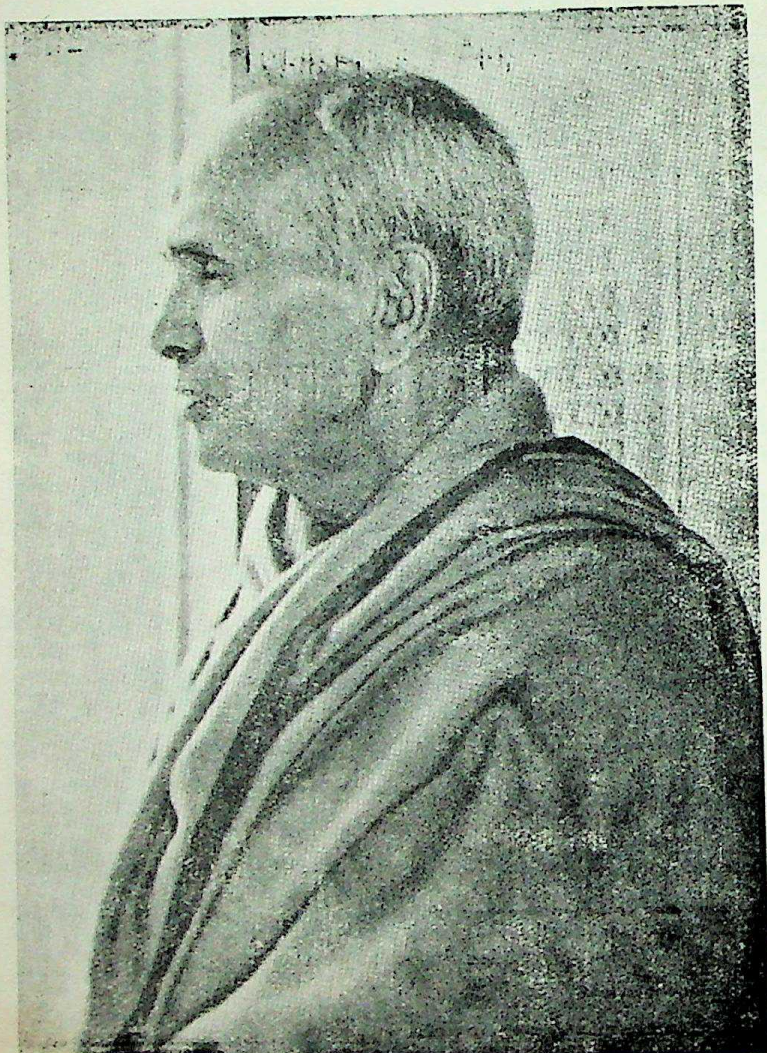
१६०६ में ही सुन्दरलाल ने इलाहाबाद से 'कर्मयोगी' नामक पाक्षिक पत्र निकाला। उस समय यह उग्र विचारों का पत्र था। कुछ समय बाद वह साप्ताहिक हो गया। वह पत्र बड़ा लोकप्रिय रहा। उसकी १०००० प्रतियां बिकती थीं। इलाहाबाद से प्रकाशित 'चाँद' नामक पत्रिका के फांसी अंक को भी सरकार ने जप्त कर लिया था।

१६१० में फिर इलाहाबाद में कांग्रेस का आठवाँ अधिवेशन आयोजित हुआ। इसके अध्यक्ष भारत के एक अंग्रेज मित्र, सर विलियम वेडरबर्न थे। मोती लाल नेहरू स्वागत समिति के उपाध्यक्ष थे।

१६११ में कायस्थ पाठशाला का परमानन्द नामक छात्र अमेरिका गया और १६१५ में बहुत से शस्त्र तथा बारूद लेकर लौटा। भारत पहुँचने पर वह गिरफ्तार कर लिया गया। उस पर मुकदमा चला और उसे ५० वर्ष



आनन्द भवन के पुस्तकालय में महात्मा गाँधी



मुन्दरलाल

(७)

की कैद हुई। वह २४ वर्ष की लगातार सजा काटकर १९३८ में नैनी जेल से मुक्त हुआ। १९११ में हरिन घोष तथा देवेन्द्रशंकर, दारागंज में घटित एक पुलिस मुठभेड़ में शहीद हुए। इलाहाबाद के दो अन्य विद्यार्थी, बालकृष्ण तथा सुगनचंद को मुल्तान तथा लाहौर षड्यन्त्र में भाग लेने के अपराध में काले पानी की सजा हुई।

सेवा समिति विद्या मन्दिर की कुछ घटनाएं उल्लेखनीय हैं। एक बार इसमें पढ़ने वाले लक्ष्मीकान्त वर्मा और असदउल्लाह काज़मी ने स्कूल में सरोजिनी नायडू द्वारा झंडा फहराने की योजना बनायी। प्रधानाचार्य इसके विरुद्ध थे। बहुत मिन्नत करने पर ही आज्ञा मिल सकी। सरोजिनी नायडू ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और विद्यार्थियों को उसकी महानता तथा विद्यार्थी समाज के दायित्व से अवगत कराया।

उधर ईविंग क्रिश्चियन कालेज के कुछ विद्यार्थी, जेड अहमद, लोहिया तथा अशरफ, जो उन दिनों स्वराज्य भवन में स्थित 'आल इंडिया कांग्रेस कमेटी' के दफ्तर में कार्य करते थे, का भाषण करवाना चाहते थे। कालेज के प्रिंसिपल ने अनुमति नहीं दी। तत्पश्चात् आंदोलन छिड़ गया, जो एक माह चलता रहा। विद्या मन्दिर स्कूल में सरोजिनी नायडू द्वारा दिये गये भाषण के अवसर पर ईविंग क्रिश्चियन कालेज के प्रिंसिपल भी उपस्थित थे। उन्हें इसका स्मरण हुआ। बहुत सोच विचार कर एक माह बाद उसने विद्यार्थियों के निवेदन को स्वीकार कर लिया और भाषण आयोजित हुए।

स्वतन्त्रता संग्राम में नेहरू परिवार की अभूतपूर्व भूमिका रही है। मोतीलाल नेहरू का जन्म ३ मई, १८६१ को आगरा में हुआ। सन् १८८७ में वे इलाहाबाद आ गए और अपने बड़े भाई नन्दलाल के अधीन वकालत प्रारम्भ की। इलाहाबाद में आयोजित अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के १८८८ के अधिवेशन में मोतीलाल ने प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया। १८९२ में पुनः इलाहाबाद में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ। मोतीलाल नेहरू इस अधिवेशन के स्वागत समिति के मन्त्री बनाये गये।

१९०० में मोतीलाल ने चर्च लेन स्थित 'महमूद मंजिल भवन' क्रय किया

(८)

और उसमें रहने लगे। बाद में उन्होंने इस भवन को कांग्रेस को दान कर दिया। १९३१ से १९४७ तक इस भवन में अखिल भारतीय कांग्रेस का कार्यालय रहा। इस भवन में कांग्रेस के कार्यक्रम तथा नीति निर्धारण से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये गए। महात्मा गांधी ने भी यदा कदा कई बैठकों में भाग लिया। विभूतियाँ जैसे आचार्य कृपलानी, सुचेता कृपलानी, जेड. अहमद अशरफ और राममनोहर लोहिया ने कुछ समय तक इस कार्यालय में कार्य किया। आनन्द भवन के लान पर आयोजित सभाओं को गांधी जी सम्बोधित करते थे। आनन्द भवन में ही नेहरू रिपोर्ट भी लिखी गई। १९०५ में मोतीलाल ने बनारस कांग्रेस में भाग लिया और १९०७ में इलाहाबाद में आयोजित प्रांतीय कांग्रेस अधिवेशन का सभापतित्व किया। १९१७ में ब्रिटिश सरकार की निरंकुश कार्यवाही के कारण उन्होंने ऐनी बेसेन्ट द्वारा स्थापित 'होम रूल' नामक संस्था की सदस्यता स्वीकार की।

१९१८ में मांटगू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट छपने पर मोतीलाल ने इसका कड़ा विरोध किया। संयुक्त प्रांतीय कौंसिल में उन्होंने इस रिपोर्ट की तीव्र भर्त्सना की। उन्होंने जालियांवाला कांड के सिलसिले में गिरफ्तार निर्दोष लोगों की पैरवी भी की। सन् १९१९ में अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन अमृतसर में सम्पन्न हुआ। मोतीलाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में जालियांवाला की दर्दनाक हत्याओं तथा नर संहार पर गहरा दुःख प्रकट कर सरकार की तीव्र शब्दों में आलोचना की।

१९२१ में खिलाफत तथा असहयोग आंदोलन के सिलसिले में मोतीलाल और जवाहरलाल गिरफ्तार कर लिए गए। अदालत में मुकदमा चला और उन्हें ६ माह का कारागार तथा पाँच सौ रुपए जुर्माने की सजा हुई। जुर्माना न देने पर पुलिस ने आनन्द भवन का कुछ सामान नीलाम कर, जुर्माने की धनराशि अदालत में जमा कर दी।

चित्तरंजनदास के साथ विचार विनिमय कर सन् १९२३ में 'स्वराज्य दल' की स्थापना की गई। इस दल का ध्येय कौंसिल में प्रवेश करना था।

१९२६ में देश में साम्प्रदायिकता ने प्रचंड रूप धारण कर लिया। सारा भारत आग की बुरी चपेट में था। शान्ति स्थापित करने हेतु मोतीलाल ने मौलाना

(६)

अब्दुल कलाम आज़ाद के सहयोग से १९२६ में भारतीय राष्ट्रीय यूनियन की स्थापना की। इस संस्था का मूल ध्येय देश में शान्ति तथा सद्भावना का वातावरण बनाना था। इस पार्टी में तेजबहादुर सप्रू, सरोजिनी नायडू, हकीम अजमल ख़ाँ तथा ए० अन्सारी सम्मिलित थे।

१९२७ में सायमन कमीशन भारत आया। इसका देश व्यापी विरोध हुआ। लाहौर के प्रदर्शन में लाला लजपतराय पर लाठियों की बौछार पड़ी जिससे उनके शरीर पर घातक चोट लगी। उनके निधन से मोतीलाल जी बड़े दुःखी हुए। अंग्रेजों ने फिर भारतीय विधान की रूप रेखा बनाने का प्रस्ताव किया। इस कार्य के लिए एक समिति गठित हुई जिसके अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू थे।

१९३० में बम्बई से आते हुए मोतीलाल नेहरू को गिरफ्तार किया गया और वे नैनी जेल में रख दिए गये। उन दिनों जवाहरलाल भी इसी जेल में बंदी थे।

२६ नवम्बर १९२६ को महात्मा गांधी इलाहाबाद पधारे। इलाहाबाद नगर पालिका ने एक मानपत्र देकर उन्हें सम्मानित किया। उत्तर देते हुए गांधी जी ने टिप्पणी की कि संगम पर नगर का गंदा पानी डालना अपराध है। गांधी जी ने ५७ वर्ष पहिले गंगा प्रदूषण के बारे में जो कहा उस पर अब १९८६-८७ में विचार किया जा रहा है।

१९३० में गांधीजी ने नमक सत्याग्रह की योजना बनाई। ६ अप्रैल को उन्होंने डांडी में नमक कानून तोड़ा। इस सत्याग्रह में इलाहाबाद के १३२० पुरुष तथा महिलाओं ने भाग लिया। गांधी जी द्वारा बनाए नमक का एक अंश जवाहर लाल नेहरू के पास था। इसे १३ अप्रैल, १९३० को इलाहाबाद में नीलाम किया गया और एस० के दर की ६०० रुपए की अधिकतम बोली स्वीकृत हुई। नीलामी नमक का अंश इस समय इलाहाबाद संग्रहालय में सुरक्षित है।

जवाहरलाल नेहरू सन् १९१२ में बैरिस्टरी पास करके इलाहाबाद लौटे। इसी वर्ष उन्होंने कांग्रेस के बांकीपुर अधिवेशन में प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

महात्मा गांधी १९१४ में दक्षिण अफ्रीका छोड़कर भारत लौट आए। १९१५ में सरकार ने उत्तर प्रदेश प्रशासन के लिए एक कार्यकारिणी समिति के गठन का वचन

दिया। इसमें गवर्नर अध्यक्ष तथा एक भारतीय प्रतिनिधि को सम्मिलित किया जाना था। चर्चा थी कि ये भारतीय प्रतिनिधि सर सुन्दरलाल होंगे। परन्तु अकारण ही सरकार ने इस समिति के गठन को टाल दिया। इसके विरोध में इलाहाबाद में एक विशाल सभा हुई जिसमें सरकार की दुलमुल नीति की आलोचना की गई।

१९१५ में ही जवाहरलाल नेहरू ने इलाहाबाद में पत्र-पत्रिकाओं पर लगे प्रतिबन्ध के विरोध में पहला भाषण दिया। ६ दिसम्बर १९१५ को वे प्रथम बार महात्मा गांधी के सम्पर्क में आए। इसी वर्ष वे होम रूल लीग में भी शामिल हुए। १९१६-१९१७ के मध्य में वे होम रूल लीग के सचिव थे।

जवाहरलाल नेहरू का राजनैतिक द्वंद १९१८ के बाद तीव्रता से बढ़ा। मसूरी के सेवाय होटल में अफगानिस्तान का प्रतिनिधि मंडल टिका हुआ था। जवाहरलाल, जो उन दिनों परिवार के साथ मसूरी में थे, प्रायः प्रतिनिधियों से मिलते थे। अंग्रेज सरकार को संदेह हुआ कि जवाहरलाल उनके साथ कोई साजिश कर रहे हैं। सरकार ने उनके मसूरी प्रवास के लिए कुछ शर्तें रखीं जिन्हें जवाहरलाल ने अस्वीकार किया। इस पर उन्हें तत्काल मसूरी छोड़ने के लिए बाध्य किया गया। रुग्ण माता पिता को छोड़ कर जवाहरलाल मसूरी से चले आए। उस समय की पत्र पत्रिकाओं में इस घटना की बड़ी चर्चा हुई।

गांधी जी ने १९१६ में आंदोलन का नेतृत्व किया और सत्याग्रह सभा की। इसका मुख्य ध्येय 'रोलेट एक्ट' का विरोध करना था। परन्तु मोतीलाल नेहरू जेल जाने के पक्ष में नहीं थे। १९१६ में मोतीलाल ने इलाहाबाद से 'Independent' नामक पत्र प्रकाशित किया। इसमें सरकार के कार्य कलापों की बड़ी आलोचना की जाती थी। कतिपय कारणों से इसे में बन्द करना पड़ा।

महात्मा गांधी कई बार इलाहाबाद आए। आनन्द भवन में कांग्रेस कार्य-कारिणी की कई बैठकें हुईं जिनमें अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए। १९२० में श्रीमती स्वरूप रानी नेहरू ने विरोध सभा में भाग लेकर अपने को गिरफ्तार करवाया।



नित्यानन्द चटर्जी



मदनमोहन मालवीय

(११)

१९२१ को प्रिंस आफ वेल्स के इलाहाबाद आगमन पर हड़ताल करवाने और उससे सम्बन्धित पोस्टर बंटवाने के आरोप में जवाहरलाल गिरफ्तार कर लिए गए। उसी वर्ष विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार करने के आरोप में वे पुनः गिरफ्तार हुए। फिर जून १९२३ को वे रिहा कर दिये गये। रिहाई के बाद वे नाभा स्टेट गये परन्तु राज्य सीमा प्रवेश करने से पहिले ही गिरफ्तार कर लिये गये। २६ नवम्बर १९२८ को साइमन कमीशन के लखनऊ आगमन तथा उसके बहिष्कार में भाग लेते समय उन पर लाठियों का प्रहार हुआ। १९२६ में वे लाहौर कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। अधिवेशन में 'पूर्ण स्वतन्त्रता' का लक्ष्य घोषित किया गया। १९२८-२९ में इलाहाबाद यूथ लीग की स्थापना हुई। जवाहरलाल नेहरू इसके सभापति और पूर्णचन्द्र जोशी इसके सचिव बने।

१ दिसम्बर १९२६ को किसान सम्मेलन में भाग लेने पर उन्हें दो साल की सजा दी गयी। २५ जनवरी १९३१ को वे रिहा कर दिये गये।

१४ अप्रैल १९३० को नमक सत्याग्रह में भाग लेने के कारण उन्हें ६ मास का दण्ड दिया गया। इस अवसर पर श्रीमती कमला नेहरू भी नगर के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर लोगों को नमक सत्याग्रह में भाग लेने के लिये प्रेरित करती रहीं। उन्हें बंदी बना कर लखनऊ सेन्ट्रल जेल भेजा गया जहाँ पूर्णिमा बनर्जी तथा उमा नेहरू बंदी के रूप में पहले ही जा चुकी थीं।

१९३० में मोतीलाल ने स्थानीय पुरुषोत्तमदास टण्डन पार्क में नमक कर कानून को तोड़ा, जिसके फलस्वरूप उन्हें कारागार जाना पड़ा। १९३१ में वे बहुत बीमार हुए। गांधी जी उन्हें देखने इलाहाबाद आये। इसी वर्ष ६ फरवरी को उनका देहांत हो गया। गांधीजी उनकी शव यात्रा में सम्मिलित हुए। पंडितजी के दाह संस्कार के पश्चात् एक शोक सभा का आयोजन किया गया। महात्मा गांधी ने सभा की अध्यक्षता की और दिवंगत नेता को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

दिसम्बर १९३१ में प्रयाग से बाहर न जाने की आज्ञा का उल्लंघन करने पर जवाहरलाल को दो साल की सजा दी गयी। माता की बीमारी के कारण वे १९३३ में रिहा कर दिये गये। १६ फरवरी १९३४ को कलकत्ता में राजद्रोहात्मक भाषण देने

(१२)

के कारण उन्हें फिर दो साल की सजा हो गयी। जवाहरलाल विभिन्न आरोपों में १६४१, १६४२ तथा १६४३ में भी गिरफ्तार हुए। १६२१-१६४५ के बीच २३ वर्षों में वे २३ दिन कम ६ वर्ष जेल में रहे। जेल में ही उन्होंने आत्मकथा तथा अन्य पुस्तकों लिखीं।

सन् १६४० में इलाहाबाद स्थित कांग्रेस कार्यालय में मुजफ्फर हसन तथा पूर्णिमा बनर्जी काम करते थे।

भारत छोड़ो आंदोलन के अवसर पर १२ अगस्त १६४२ को प्रयाग विश्व-विद्यालय के यूनियन हाल में एक सभा हुई। इसी दिन छात्रों का एक जुलूस कचहरी की ओर गया। लाल पद्मधर नामक एक बी० एस० सी० कक्षा के छात्र ने इस जुलूस का नेतृत्व किया। नगर के विभिन्न क्षेत्रों से भी अनेक छात्र कचहरी की ओर लपके। जुलूस के पहुँचते ही पुलिस ने छात्र-छात्राओं पर लाठियों से प्रहार किया। इसका जब असर नहीं हुआ तो गोलियाँ चलाई गयीं। लाल पद्मधर कुछ समय तक भीषण गोलीकांड के बीच तिरंगा झण्डा लिये खड़े रहे। अचानक ही एक गोली उनके वक्ष को पार कर गयी और वे शहीद होकर उस लोक में पहुँच गये जहाँ से कोई वापस नहीं लौटता।

रामधारी सिंह 'दिनकर' ने उन्हीं दिनों एक कविता रची जिसे जुलूस यात्रा में प्रायः उच्चारित किया जाता था—

कलम आज उनकी जय बोल
जो चढ़ गए पुराय वैदी पर,
लिए बिना गर्दन को मोल।
जिनकी महिमा के साक्षी हैं
चन्द्र, सूर्य भूगोल खगोल,
कलम आज उनकी जय बोल।

१६४२ के आंदोलन के दौरान रमेश मालवीय नामक एक १२ वर्षीय छात्र गोली के प्रहार से मृत्यु हो गयी। शचीन्द्र नाथ सान्याल क्रांतिकारी के रूप में इलाहाबाद में रहे।

(११)

१९४५ में जवाहरलाल नेहरू, तेज बहादुर सप्रू तथा कैलाश नाथ काटजू ने आज़ाद हिन्द फौज के अधिकारियों पर लगे अभियोग की दिल्ली जाकर पँरवी की।

इंदिरा का जन्म १६ नवम्बर १९१७ को हुआ। वह अपने दादा मोतीलाल नेहरू की लाइली थीं। दिसम्बर १९२१ में जब पुलिस आनन्द भवन के सामान को नीलाम कर रही थी, तो इंदिरा वहाँ उपस्थित दारोगा पर झपट गयीं और डांट कर कहा कि सामान छोड़ो और भागो। जब इंदिरा १२ वर्ष की थीं, तो वह लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू के साथ उपस्थित थीं। अधिवेशन के विशाल जन समूह तथा गगनभेदी नारों ने बालिका के हृदय में राष्ट्रीयता का अंकुर उत्पन्न कर दिया। १९२० में उसने बानर सेना का संगठन किया और स्वयं उसकी कप्तान बनीं। इस बानर सेना में इलाहाबाद के सैकड़ों बालक तथा बालिकाएं सम्मिलित हुए। जवाहरलाल नेहरू की गिरफ्तारी के विरोध में जब इलाहाबाद में सप्ताह भर का कार्यक्रम बना तो बानर सेना ने भी इसमें सक्रिय भाग लिया। भारत छोड़ो आंदोलन में इंदिरा १३ माह नैनी जेल में रहीं। गांधी जी जब भी इलाहाबाद आये इंदिरा बराबर उनके साथ रहती थीं। अपने यशस्वी पिता के साथ देश विदेश की अनेक सभाओं तथा समितियों की परिचर्चाएं सुनती रहीं जिससे उसका राजनैतिक क्षितिज व्यापक हुआ। वे १९४४ में सूचना तथा प्रसारण मंत्री बनीं। १९४४ में उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री का पद ग्रहण किया। अपने कार्यकाल में श्रीमती इंदिरा गांधी ने देश की बागडोर दृढ़ता तथा कुशलता से संभाली और विश्व के इतिहास में अमरत्व प्राप्त किया।

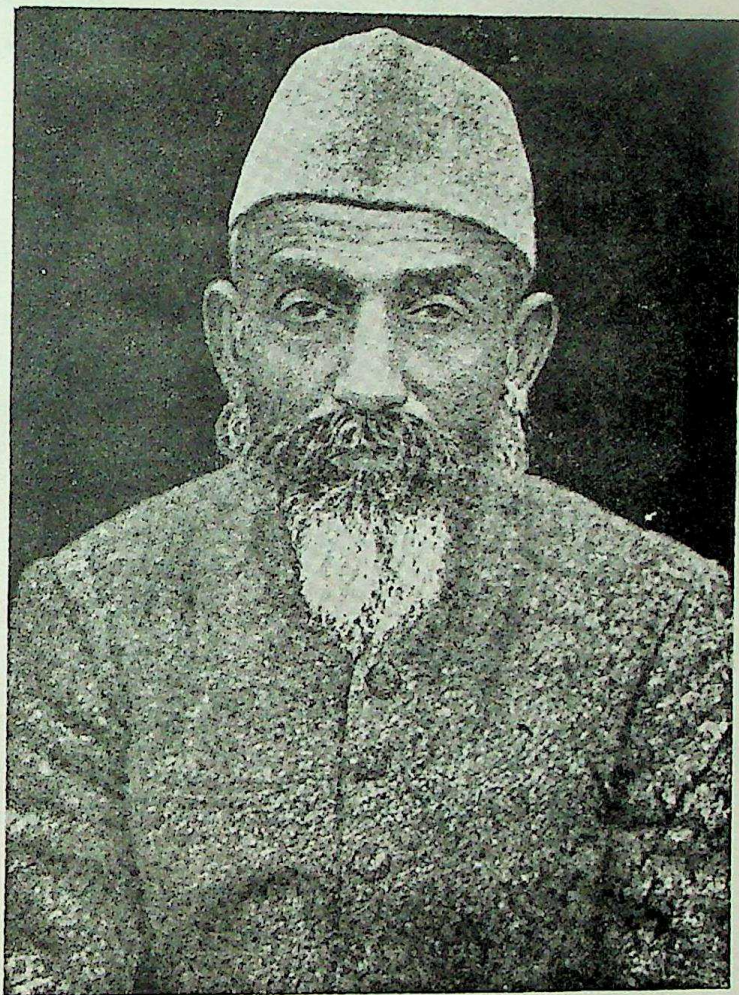
पुरुषोत्तमदास टंडन ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान दिया। वे सन् १८९६ में लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में स्वयंसेवक के रूप में गये। इसके बाद वे लगभग दो शतक तक विभिन्न कार्यों में व्यस्त रहे। असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण उन्हें ७ दिसम्बर १९२१ को १३ वर्ष की सजा हुयी। टंडन निर्भीक व्यक्ति थे। १९३१ में स्थानीय अल्फ्रेड पार्क में महान् क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आज़ाद पुलिस की गोली से हत हुये। टंडनजी उनकी शव यात्रा में रसूलाबाद घाट तक गये और इस वीर पुरुष की अंत्येष्टि क्रिया सम्पन्न करवाई। आज़ाद ने सन् १९२१ से ही राजनैतिक आन्दोलन में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। इसी वर्ष जेल में

इन पर एक दर्जन बेंत लगाये गये थे। वे महान् क्रान्तिकारी थे। जिस पेड़ के नीचे आजाद शहीद हुए थे उसके निकट प्रायः प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है—

रगों में दौड़ने फिरने का मैं नहीं कायल,
जो आँख ही से न टपका आँसू वह लहू क्या है ?

टंडन सन् १९२३ में उत्तर प्रदेश कांग्रेस समिति के सभापति चुने गये। उन्होंने सविनय अवज्ञा तथा लगानबंदी आन्दोलन में भाग लिया। ६ अगस्त १९४२ को वे नजरबंद करके फतेहगढ़ जेल भेज दिये गये। टंडन हिन्दी के अनन्य भक्त तथा प्रचारक थे। वे सिद्धान्तों का कड़ाई से पालन करते थे। उन्होंने भारत-विभाजन के प्रति विरोध की आवाज उठायी थी। १९५० में मतभेद के कारण उन्होंने कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दे दिया था। १९३७ में वे विधान सभा के अध्यक्ष चुने गये। उन्होंने इस पद पर रहकर अनोखी शालीनता तथा समझ बूझ का परिचय दिया। इलाहाबाद के कैलाशनाथ काटजू, विजयलक्ष्मी पंडित, कृष्णाकान्त मालवीय, मंगलाप्रसाद, विश्वम्भरनाथ पाण्डेय, केशवदेव मालवीय, मुजफ्फर हसन, पी० डी० टंडन (पत्रकार) तथा अनगिनत देशभक्तों ने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया। लालबहादुर शास्त्री का कार्य क्षेत्र इलाहाबाद ही रहा। १९२५ में वे लाला लाजपतराय द्वारा संस्थापित 'सर्वेंट्स आफ दी पीपुल्स सोसायटी' के सदस्य बने। १९२६ में वे इलाहाबाद जिला कांग्रेस कमेटी के सचिव नियुक्त हुये। १९३० में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने के कारण उन्हें कारागार की सजा मिली। उन्होंने गाँव-गाँव में जाकर महात्मा गांधी का संदेश पहुँचाया। १९३२-३३ के लगानबंदी आन्दोलन में भाग लेने के अपराध में उन्हें पुनः जेल की यात्रा करनी पड़ी।

असहयोग आंदोलन का क्रीड़ा क्षेत्र होने के कारण अंग्रेज सरकार इस नगर से रूष्ट हो गई। सरकार ने १९२१ में प्रांत की राजधानी इलाहाबाद से उठार लखनऊ स्थानान्तरित कर दी गयी। यहाँ से अनेक कार्यालय लखनऊ चले गये। इस सम्बन्ध में कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'स्टेट्समैन' जिनका संचालन गोरे लोगों के हाथ में था, में टिप्पणी प्रकाशित हुयी जिसे, 'मार्डन रिव्यू' नामक पत्रिका ने प्रकाशित किया—“The 'Statesman' has published



पुरुषोत्तमदास टण्डन



लालबहादुर शास्त्री एवं इन्दिरा गाँधी

(१५)

the open secret that the piece meal removal of the capital of U. P. from Allahabad is intended as a punishment for the political sins of the city."

कार्यालयों का स्थानान्तरण जारी रहा। इस सम्बन्ध में १९३७ में इलाहाबाद में एक विशाल सभा आयोजित की गयी जिसके सभापति विश्वम्भरनाथ पाण्डेय थे। सर्व सम्मति से प्रस्ताव पारित कि 'यदि इस समय यह सम्भव न हो सके कि सारे सरकारी कार्यालय पुनः इलाहाबाद चले जायं, तो कम से कम इतना तो अवश्य ही होना चाहिये कि कुछ विभागों के कार्यालय यहाँ लाये जायें। व्यवस्थापिका सभा का अधिवेशन यहीं किया जाय तथा मन्त्री साल में कुछ महीने यहाँ रहें।' यह टिप्पणी सरस्वती, भाग २, १९३७ में प्रकाशित हुई थी।

स्वाधीनता दिवस १९५७ के पुनीत अवसर पर उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र नगर के उन देशभक्तों को श्रद्धा सुमन प्रस्तुत करता है जिनके योगदान, त्याग और बलिदान से भारतवर्ष को दासता से मुक्ति मिली।

१५ अगस्त, १९५७

— 10 : —

हिमगिरि शिखर से लेकर कन्याकुमारी तक,
‘जय जन्मभूमि जननी’ का घोष छा गया ।
गंगा में उमंग यमुना में रंग की तरंग,
झण्डा लाल किले पै तिरंगा फहरा गया ।
सिर से उतर गया बोझ, परतंत्रता का,
स्वाभिमान सहित स्वदेश स्वत्व पा गया ।
सुदिन स्वराज्य का, स्वतंत्रता का, समता का,
सत्य का, सनेही का ‘सनेही’ आज आ गया ।

गयाप्रसाद शुक्ल ‘सनेही’

१५ अगस्त, १९४७

